आईसीएआर-आईवीआरआई, आईसीएआर-अटारी लुधियाना (जोन-1) एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के मध्य पशुधन प्रसार एवं जलवायु अनुकूल पशुपालन पर इंटरफेस मीट का आयोजन

भा.कृ.अनु.प.– भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, मुक्तेश्वर, **भा.कृ.अनु.प** – कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, लुधियाना (जोन-1), गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान तथा वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली उत्तराखण्ड औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, भर्सार के कृषि विज्ञान केंद्रों (KVKs) के मध्य एक इंटरफेस मीट का सफल आयोजन दिनांक 14 मई 2026 को आईसीएआर-आईवीआरआई, मुक्तेश्वर में हाइब्रिड माध्यम से किया गया। कार्यक्रम में अटारी लुधियाना (जोन-1) तथा उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों से 13 कृषि विज्ञान केंद्रों (कृषि विज्ञान केंद्र: नैनीताल, अल्मोड़ा, बागेश्वर, उधमसिंह नगर, पिथौरागढ़, चंपावत, देहरादून, हरिद्वार, टिहरी गढ़वाल, पौड़ी गढ़वाल, चमोली, उत्तरकाशी एवं रुद्रप्रयाग) के वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों ने सहभागिता की। इसके अतिरिक्त प्रगतिशील कृषकों, विषय विशेषज्ञों तथा आईसीएआर-आईवीआरआई, मुक्तेश्वर के वैज्ञानिकों एवं संकाय सदस्यों ने भी सक्रिय भागीदारी की। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए पर्वतीय क्षेत्रों हेतु उपयुक्त पशुधन एवं कृषि तकनीकों के प्रभावी प्रसार के लिए अनुसंधान संस्थानों, प्रसार तंत्र एवं कृषक समुदाय के मध्य सहयोग को सुदृढ़ करना था।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. वाई. पी. एस. मलिक, संयुक्त निदेशक, आईसीएआर-आईवीआरआई, मुक्तेश्वर द्वारा की गई। उन्होंने पशुधन उत्पादन, पशु स्वास्थ्य, नस्ल सुधार तथा जलवायु अनुकूल पशुपालन में आईवीआरआई मुक्तेश्वर के योगदान पर प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, मुक्तेश्वर, कृषि विज्ञान केंद्रों एवं अटारी, लुधियाना के मध्य सहयोग को सुदृढ़ करने पर जोर दिया।

डॉ. परविंदर श्योराण, निदेशक, आईसीएआर-अटारी, लुधियाना ने कृषि प्रसार गतिविधियों एवं तकनीकी हस्तांतरण में समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अमोल गुरव ने कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्यों की जानकारी दी।

इसके पश्चात विभिन्न विशेषज्ञों ने आईवीआरआई तकनीकों, जैविक खेती, जैविक खाद उत्पादन, जलवायु परिवर्तन के पशुधन पर प्रभाव तथा संतुलित पोषण संबंधी विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। विशेषज्ञों ने किसानों की समस्याओं एवं प्रश्नों का समाधान भी किया।

संवाद सत्र में किसानों एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के अधिकारियों ने वन्यजीव प्रकोप, उपयुक्त चारा प्रजातियों, विपणन सुविधाओं तथा आईवीआरआई तकनीकों के क्षेत्रीय प्रदर्शन की आवश्यकता पर सुझाव दिए। बैठक में भविष्य के सहयोग हेतु संयुक्त कार्ययोजना तैयार की गई। इस कार्ययोजना के अंतर्गत निम्नलिखित प्रमुख अनुशंसाएँ की गईं:

1. जैविक एवं प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने हेतु क्लस्टर आधारित कृषि मॉडल को बढ़ावा देना।
2. पर्वतीय क्षेत्रों में पशुधन प्रसार सेवाओं एवं अनुसंधान संस्थानों, कृषि विज्ञान केंद्रों, अटारी तथा अन्य विभागों के मध्य समन्वय को सुदृढ़ करना।
3. उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों हेतु जलवायु अनुकूल पशुपालन पद्धतियों का विकास।
4. क्षेत्रीय प्रदर्शन, क्षमता निर्माण कार्यक्रमों एवं पशुधन तकनीकों के प्रभावी प्रसार को बढ़ावा देना।
5. प्रभावी पशुधन प्रबंधन हेतु पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेज (PoPs) का विकास एवं हितधारकों के मध्य उनका व्यापक प्रसार।
6. ICAR संस्थानों एवं कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा विकसित "तकनीकी नवाचारों के समूह (Bucket of Technologies) का प्रभावी प्रसार हितधारकों तक किया जाना चाहिए, ताकि तकनीक अपनाने, उत्पादकता वृद्धि एवं सतत कृषि को बढ़ावा मिल सके।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर किसानों को कृषि उपकरण वितरित किए गए। आईसीएआर-आईवीआरआई के निदेशक डॉ. राघवेंद्र भट्टा ने कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु पूरी टीम को बधाई दी। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. अमोल गुरव, डॉ. नितीश सिंह खरायत एवं डॉ. सैयद नबील आबेदीन द्वारा किया गया।

<u>सभी प्रतिभागियों का समूह छायाचित्र</u>

<u>आईसीएआर-आईवीआरआई, मुक्तेश्वर के संयुक्त निदेशक का संबोधन</u>

<u>कृषि विज्ञान केंद्रों के अधिकारियों एवं प्रगतिशील किसानों द्वारा सुझाव</u>